तौहीद और शिर्क

लेखक- सैयद अबुल आला मौदूदी रह0

अनुवाद- डा० रफ़ीक़ अहमद

हमारे ऊपर अल्लाह तआला के एहसानात बेहदो हिसाब हैं जिनकी कोई गिनती नहीं की जा सकती। लेकिन निःसन्देह उसका सबसे बड़ा एहसान यह है कि उसने हमको ख़ालिस तौहीद (विशुद्ध एकेश्वरवाद) की शिक्षा दी, जिसके अन्दर अल्लाह तआला की ज़ात, सिफ़ात, इख्तियार और अधिकार में किसी दूसरे की मामूली से मामूली शिर्कत के लिये भी कोई गुन्जाइश नहीं है। और सारी हैसीयतों से खुदाई सिर्फ एक सच्चे माबूद (उपास्य) के लिए खास है। यह कितनी बड़ी नेमत है, इसकी सही क़द्र आप सिर्फ उसी वक़्त समझ सकते हैं जब तौहीद और शिर्क के फ़र्क को अच्छी तरह समझ लें।

इन्सानी दुनिया और शिर्क :-

शिर्क का स्वभाव यह है कि वह इन्सानीयत को बांटता और इन्सानों को इन्सानों से फाड़ता है। पूरे मानव इतिहास में कोई एक मिसाल भी ऐसी नहीं मिलती जो यह गवाही देती हो कि सम्पूर्ण विश्व के बहुदेववादी यानी मुश्रिकीन किसी एक माबूद (उपास्य) पर, या कुछ माबूदों पर कभी सन्तुष्ट हुये हों। सारी दुनिया तो दूर की बात ज़मीन के किसी एक भू-भाग में बसने वाले मुश्रिक भी किसी माबूद, या माबूदों के किसी गिरोह पर सहमत नहीं पाये गये। क़बीलों, क़बीलों के माबूद अलग रहे और यह अलग-अलग माबूद भी हमेशा नहीं रहे, बल्कि ज़माने की हर चक्र के साथ बदलते चले गये हैं। इस तरह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) कभी किसी दौर में इन्सानीयत को एकत्र करने वाली ताकत नहीं

मखलूक़ात (सृष्टियों) की ख़ुदाई के हर धारणा से अपने ज़ेह्न को पाक करके सिर्फ एक ख़ुदा को माबूदे बरहक (सच्चा उपास्य) मान लेंगे, और ख़ुदावन्द आलम की ज़ात, सिफ़ात, इख़्तियारात और अधिकारो में- किसी चीज़ में भी किसी मख़लूक (प्राणी) की शिर्कत के झूठे ख्याल को अपने दिल व दिमाग़ के हर गोशे से निकाल बाहर करेंगे, वह लाज़मी तौर पर एक उम्मत और समुदाय बनेंगे। यक़ीनी तौर पर उनमें वहदत (एकत्व) पैदा होगी, ज़रूर वह एक-दूसरे के दोस्त और एक दूसरे के भाई बनकर रहेंगे। इतिहास में इसका कोई एक उदाहरण नहीं मिलता कि एक अल्लाह तआला की वहदानीयत (एकत्वता) के सिवा कोई और चीज़ इन्सानों को जमा करने वाली पायी गयी हो। अगर इन्सान जमा हो सकते हैं तो सिर्फ उस एक माबूद पर जो वास्तव में सम्पूर्ण जगत का माबूद (उपास्य) है। उसी के मानने पर उनके अन्दर एकता पैदा हो सकती है और उसी की ग़ुलामी पर सहमति उन्हें एक दूसरे का भाई बना सकता है। तौहीदे इलाह (एक ख़ुदा) का नतीजा तौहीद उम्मत (एक उम्मत) एक ऐसी अटल हक़ीक़त है जो कभी ग़लत साबित नहीं हुई है न ग़लत साबित हो सकती है। अगर कभी किसी जगह आप देखें कि तौहीद पर ईमान का दावा तो मौजूद है लेकिन दावा करने वाली उस उम्मत में वहदत (एकत्व) मौजूद नहीं है, बल्कि उल्टे फ़िरकाबन्दी रंगभेद और आपसी नफ़रत व मुख़ालफत के फ़ितने बरपा हैं, तो पैनी निगाहों से उनका जाइज़ा ले कर आप सरलता से

मालूम कर लेंगे कि उम्मत में शिर्क घुस आया है और उसी के बेशुमार और अनगिनत बुराइयों में से कोई न कोई बुराई उसके समर्थकों और समुदायों को एक दूसरे से फाड़ रहा है। यह बात न हो तो जिस तरह दो और दो पांच नहीं हो सकते, उसी तरह शिर्क की मिलावट के बग़ैर एक खुदा को मानने वाले, दस झगड़ालू गिरोहों में बट नहीं सकते ।

अब देखें कि सारे इन्सानों को हर दौर में एक उम्मत के अन्दर जमा करने के लिए तौहीद की बुनियाद प्रदान करने के बाद अल्लाह तआला ने इस वहदत (एकत्व) को क़ायम व स्थायी रखने के लिए और क्या प्रबन्ध किया है।

इन्सान के लिए खुदा की रहनुमाई :–

उसने एक रसूल सल्ल० को भेजकर और एक किताब अवतरित कर इन्सानी ज़िन्दगी के हर पहलू और हर विभाग के लिए एक ऐसी रहनुमाई प्रदान की। जिससे बाहर जाकर इन्सान को कहीं और हिदायत और मार्गदर्शन तलाश करने की आवश्यकता बाक़ी नहीं रही। एक उम्मत और समुदाय बन जाने के बाद इन्सान अगर विभक्त हो सकते हैं तो सिर्फ़ इस वजह से कि उनको किसी एक स्रोत से सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था न मिले और वह विभिन्न परिस्थितियां, विभिन्न स्थानों और विभिन्न कालों में दूसरे साधनों से मार्गदर्शन प्राप्त करने पर मजबूर हों। ऐसी हालत में तो निःसन्देह इन्सान हिदायत व मार्गदर्शन के लिए बहुत से संसाधनों की ओर ध्यान देगें और इससे लाज़मी तौर पर

उनके अन्दर फ़िरक़ाबन्दी पैदा होगी। लेकिन जब प्रत्येक स्थान और समय के लिये हर प्रकार की परिस्थितियों में एक ही साधन से हिदायत और मार्गदर्शन मिल जाये तो एक ख़ुदा पर ईमान रखने वाली उम्मत के लिये फ़िरक़ाबन्दी का कोई ख़तरा बाक़ी नहीं रहता, सिवाये इसके कि यह लोग या तो जिहालत और अज्ञानता के बिना पर उसकी हिदायत से परिचित ही न हों, या फिर बुद्धि और विचार के टेढ़ेपन के सबब अस्ल हिदायत में अपनी तरफ़ से कुछ घटायें और कुछ बढ़ायें और इस तरह की कमी व ज़्यादती करने वाला हर गिरोह यह दावा करे कि उसका तैयार किया हुआ धर्म ही मूल धर्म है जिसका पालन न करने वाला पथभ्रष्ट, नाफ़र्मान या क़ाफिर है।

जवाबदेही ! सिर्फ ख़ुदा के सामने :–

दूसरी अहम चीज़ जो मिल्लत की एकता की मज़बूती और सीधे रास्ते पर क़ायम रखने के लिये प्रदान की गयी है वह यह अकीदा और विश्वास है कि इन्सान सिर्फ एक ख़ुदा के सामने जवाबदेह है। वही एक ख़ुदा दुनिया में भी उसकी किस्मत बनाने और बिगाड़ने का पूरा अधिकार रखता है और वही एक ख़ुदा न्याय के दिन का भी मालिक है। उसके सिवा न कोई इन्सानों के आमाल की पूछगच्छ करने वाला, न किसी के हाथ में सज़ा या इनाम देने का अधिकार है। जैसा कि मैंने बताया, यह अक़ीदा और विश्वास न सिर्फ़ मिल्लत की एकता और इत्तेहाद की ज़मानत देता है बल्कि इसी पर इन्सानी सीरत व किरदार (जीवन चरित्र) के सही और दुरुस्त रहने का

आधार है। इस अक़ीदे के उन लाज़मी नतीजों को खत्म करके अगर कोई चीज़ इन्सानों को तितर-बितर करने वाली और कुमार्गी बनाने वाली है तो वह सिर्फ यह है कि लोग दुनिया में ख़ुदा के सिवा दूसरी विभिन्न हस्तियों को इच्छा और कामना पूरी करने वाला क़रार देने लगें और आख़िरत के बारे में यह समझने लगें कि वहां ख़ुदा के न्याय में हस्तक्षेप करने के अधिकार दूसरी हस्तियों को प्राप्त होंगे।

एकता का महानतम् दृश्य :-

इसके बाद देखिये कि अल्लाह तआला ने कुछ ऐसी चीज़ें हम पर लाज़िम की हैं जो उम्मत के एकत्व को अमली तौर पर क़ायम और स्थायी तौर पर सक्रिय रखने वाली हैं। उनमें सबसे पहली चीज़ नमाज़ है जो रोज़ाना पांच वक्त के लिये दुनिया भर के मुसलमानों पर फर्ज़ कर दी गयी है। उसके लिये एक क़िब्ला (दिशा) निर्धारित है जिसकी ओर हर नमाज़ के वक्त पूरब और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण और विभिन्न दिशाओं के बीच रहने वाले सब मुसलमानों को रुख करना होता है। इस नक्शे की तनिक कल्पना की आंखों के समक्ष लाकर देखिये कि खाना-ए-काबा एक केन्द्र है और सम्पूर्ण विश्व के मुसलमान इसी एक केन्द्र की ओर रुख किये हुये खड़े, बैठे, रुकूअ और सजदे कर रहे हैं। हर नमाज़ के वक्त यह दायरा हरमे पाक से शुरू होता है जहां खाना-ए-काबा के करीब नमाज़ पढ़ने वाले तमाम लोग एक हाला (दायरा) बने हुये नज़र आते हैं, और फिर यही दायरा फैलते - फैलते पूरी धरती पर मुहीत (आच्छादित)

हो जाता है। ये रोज़ाना पांच वक्त का अमल है। इससे बढ़कर इत्तेहाद और एकता का प्रदर्शन और क्या हो सकता है? और इस्लाम के सिवा यह प्रदर्शन आप और कहां पाते हैं।

इस पांच वक़्तों की नमाज़ को फर्ज़ करने के साथ अल्लाह तआला ने उसे जमाअत के साथ अदा करना अनिवार्य किया है, सिवाये यह कि कोई मुसलमान अपनी जगह अकेला हो और उसे जमाअत न मिल रही हो। अल्लाह की इबादत का मक़सद तो अकेले-अकेले नमाज़ पढ़ने से भी हासिल हो सकता था, मगर उम्मत के एकत्व का मक़सद बाजमाअत नमाज़ के बग़ैर हासिल होना सम्भव न था, इसी लिए यह अनिवार्य किया गया कि जहां मुसलमान भी मौजूद हों वहां एक ईमाम और दूसरा मुक़तदी (अनुकर्ता) बने और दोनों मिलाकर जमाअत के साथ नमाज़ अदा करें।

खुदा परस्तों की एक विश्वव्यापी बिरादरी :-

नमाज़ के लिये लोगों को बुलाने का तरीक़ा भी इस्लाम में ऐसा बेमिसाल निर्धारित किया गया है जो दुनिया के किसी धार्मिक या अधर्मी गिरोह को अपने किसी समारोह या सम्मेलन की दावत देने के लिए उपलब्ध नहीं है। नमाज़ का बुलावा देने के लिए ज़मीन की पीठ पर हर जगह हर रोज़ पांचों वक्त एक ही भाषा में अज़ान की आवाज़ बुलन्द की जाती है, बजुज़ इससे कि बुलाने वालों और बुलाये जाने वालों की अपनी भाषा चाहे कुछ भी हो। इस सामान्य भाषा की अज़ान दुनिया में जहां

भी बुलन्द होगी उसे सुनने वाला हर मुसलमान जान लेगा कि यह नमाज़ का बुलावा है और फ़लां मुक़ाम से बुलन्द हो रहा है। जहां मुझे अपने भाइयों के साथ जमा होकर एक खुदा की इबादत बजा लानी है, फिर कमाल यह है कि अज़ान सिर्फ नमाज़ का बुलावा ही नहीं है बल्कि इस्लाम के पूरे अक़ीदे का ऐलान भी है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उसके सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं, मुहम्मद सल्ल० उसके रसूल हैं, और मेरी कामयाबी उसी एक खुदा की इबादत से वाबस्ता है जिसकी तरफ़ आने के लिये मुझे पुकारा जा रहा है। क्या इससे बेहतर दावत देने के तरीक़ो की कोई इन्सान कल्पना कर सकता है ? यह दावत दुनिया में हर जगह लोगों को नमाज़ के लिये जमा भी करती है और एक ही अक़ीदे पर सहमत भी।

नमाज़ :–

फिर नमाज़ के अवक़ात (समयावली), उसको अदा करने तरीक़े और उसमें पढ़ी जाने वाली चीज़ें पूरी दुनिया में समान है, कुछ आंशिक चीज़ों में अगर कुछ फ़र्क़ भी हो तो वह ऐसा नहीं है कि दक्षिणी अफ्रीक़ा का मुसलमान उत्तरी अमरीका में, या जापान का मुसलमान मोरोक्को या फ्रांस में जाकर यह महसूस करे कि यहां नमाज़ के बजाये कोई और इबादत की जा रही है। इस तरह यह नमाज़ खुदा परस्ती (ईशभक्ति) के जज़्बे को हर पल ताज़ा भी करती है और खुदा परस्तों (ईशभक्तो)में विश्वव्यापी बिरादरी की भावना जीवित और सक्रिय भी रखती है।

रोज़ा :–

ऐसा ही मामला रोज़ों का भी है। अगर सिर्फ़ रोज़े की इबादत ही मक़सूद होती तो हर मुसलमान को बस यह हुक्म देना काफी था कि वह साल में तीस रोज़े जब चाहे रख ले। लेकिन एक ख़ुदा की इबादत के साथ दुनिया भर के मुसलमानों को एक उम्मत भी बनाना मक़सूद था, इसलिए रमज़ान का एक ही महीना हर वर्ष रोज़ा रखने के लिए निर्धारित किया गया। सारे मुसलमान एक साथ यह इबादत करें। रोज़े की शुरूआत और समाप्ति का भी एक समय रखा गया है ताकि सब का रोज़ा एक साथ शुरू और एक साथ खत्म हो। रोज़े के हुक्म भी सभी के लिए समान रखे गये हैं ताकि सारे मुसलमान उम्र भर हर वर्ष पूरे 30 या 29 दिन के रोज़े एक ही तरीक़े से, एक ही तरह की पाबन्दियों के साथ रखते रहें। इससे लाज़मी तौर पर दुनिया भर के मुसलमानों में यह शऊर ज़िन्दा और ताज़ा रहता है कि वह एक ही शरीअत की पाबन्दी करने वाली उम्मत हैं। इसके अलावा तरावीह की नमाज़ है जो पांच वक्तों के अलावा सारी दुनिया में रमज़ान की हर रात को जमाअत के साथ अदा की जाती है और इसमें आमतौर पर पूरा क़ुरआन पढ़ा जाता है। यह इबादत भी है, ख़ुदा के कलामे पाक की तबलीग़ और ज़िक्र भी है और उम्मत की एकता और इत्तेहाद को और ज्यादा मज़बूत और द्रढ़ करने वाली चीज़ भी। क़ुरआन को हर वर्ष महीने भर तक रोज़ाना सुनने वाले चाहे उसकी भाषा से परिचित हों, या न हों, उसको समझते हों या न समझते हों, हर स्थित में उन

सब में यह समान भावना ज़रूर पैदा होती है कि वह सब एक किताब के मानने वाले हैं और वह किताब उनके रब की किताब है।

हज :–

अब ज़रा हज को देखिये जिससे बढ़कर मिल्लते इस्लाम के एक विश्वव्यापी मिल्लत होने का प्रदर्शन दूसरी इबादत में नहीं होता। अल्लाह तआला ने दुनिया के हर उस मुसलमान पर जो हज की ताक़त व हैसीयत रखता हो, यह लाज़िम कर दिया है कि वह उम्र में एक बार इस फ़रीज़े को अदा करें। और यह फ़रीज़ा कुछ निर्धारित तारीखों ही में अदा किया जा सकता है जो साल भर में सिर्फ एक बार आती है। उस धरती पर जहां–जहां भी मुसलमान आबाद हों वहां से एक ही समय में सभी हैसीयतदार मुसलमानों को मक्के में इकट्ठा होना पड़ता है। आप ग़ौर कीजिये, यह वह चीज़ है जो हर साल दुनिया के हर भाग से आम इन्सानों को खींच कर एक जगह लाती है, सिर्फ राजनैतिज्ञों को नहीं लाती जैसे यू.एन.ओ. में जमा होते हैं, सिर्फ क़ौमों के लीडरों को भी नहीं लाती जैसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में आया करते हैं। यह हर देश और हर क़ौम के जनता को लाखों की तादाद में खींच लाती है, और इस मक़सद के लिये लाती हे कि वह सब मिल कर एक खुदा की इबादत करें, एक साथ खाना–ए–काबा का तवाफ (परिक्रमा) करें, एक साथ मक्का से मिना और मिना से अराफ़ात और अराफ़ात से मुज़दलफ़ा और मुज़दलफ़ा से फिर मिना की तरफ कूच करें, एक साथ कुर्बानियां करें, एक साथ रमी जिमार (शैतान को पत्थर मारना) करें, एक साथ अराफ़ात में क़ियाम

और मिना में कुछ रोज़ ठहरें, एक ही भाषा में सब लब्बैक लब्बैक की आवाज़े बुलन्द करें, एक साथ उस किब्ले के गिर्द नमाज़े अदा करें जिसकी तरफ रुख करके हर रोज़ पांच बार वह अपनी-अपनी जगह नमाज पढ़ते रहे हैं। इनमें हर नस्ल, हर क़ौम, हर रंग और हर मुल्क के लोग इकट्ठा होते हैं, हर भाषा बोलने वाले इकट्ठे होते हैं, सब अपने-अपने घरों में तरह-तरह के लिबास पहने हुये आते हैं, उनमें अमीर भी होते हैं और गरीब भी, बादशाह भी होते हैं और फ़क़ीर भी, मगर वहां यह सारे फ़र्क मिट जाते हैं। हरम की सीमाओं में पहुंचने से पहले ही सबके लिबास उतरवा कर एक ही तरह का फ़कीराना लिबास ''इहराम'' पहनवा दिया जाता है, जिसे देखकर कोई शख्स भी यह फर्क नहीं कर सकता कि कौन कहां का रहने वाला है और किस का क्या दर्जा है। बड़े से बड़े आदमी को भी इस ऊँचे मुक़ाम से उतार कर आम इन्सानों की सतेह पर ले आया जाता है। ऊँची से ऊँची सभ्यता और संस्कृति रखने वालों के भी सामाजिक जीवन की बिल्कुल निचली सतेह पर रहने वालों के साथ मिला दिया जाता है। लाखों आदमियों के भीड़ में तवाफ़ व सई (काबे तथा सफा-मरवा के चक्कर लगाना) करते हुये एक रईस को भी इसी तरह धक्के खाने पड़ते हैं जिस तरह कोई आम आदमी धक्के खाता है, खुदा के दरबार में पहुँच कर हर शख्स के दिमाग़ से बड़कपन का खन्नास निकाल दिया जाता है, रंग व नस्ल और भाषा और देश के सारे फ़र्क़ मिटा करके दुनिया के हर भाग से

मुसलमानों के अन्दर एक उम्मत होने का एहसास इस क़ूव्वत के साथ बिठा दिया जाता है कि उसका असर किसी के मिटाये नहीं मिट सकता। दुनिया के किसी मज़हब और किसी ग़ैर मज़हबी समूह के पास भी अपने अनुयाइयों को इस कद्र विश्वव्यापी स्तर पर एक करने और हर साल उस एकता को ताज़ा करते रहने का ऐसा की कीमिया असर नुस्खा मौजूद नहीं है। यह सिर्फ़ उस खुदा की हिक्मत का चमत्कार है जिसकी वहदत को मानकर, जिसके रसूल सल्ल० और जिसकी किताब की पैरवी कुबूल करके जिसके समक्ष अपनी जवाबदेही का शऊर पैदा करके मुलसमान एक उम्मत बनते हैं।

और यह ईदुल अज़हा है :-

अल्लाह तआला का और ज़्यादा फ़ज़्ल यह है कि उसने हज की उन बर्कतों को भी सिर्फ़ उन लोगों तक सीमित नहीं रखा जो इस इबादत के मनासिक (परिपाटियां) अदा करने के लिये इस्लामी केन्द्र में एकत्र होते हैं, बल्कि सारी दुनिया के मुसलमानों के लिये भी यह मौका पैदा कर दिया कि हज ही के ज़माने में वह अपनी-अपनी जगह हाजियों के शरीके हाल बन सकें। यह ईदुल अज़हा की नमाज़ और यह कुर्बानी जो उन तीन दिनों के अन्दर ज़मीन के हर हिस्से में की जाती है, इसी मक़सद के लिये निर्धारित की जाती है।

दुनिया भर के मुसलमानों को हुक्म दिया गया है कि जिस रोज़ यानी (9 ज़िलहिज्जा को) हज अदा करने के लिये हाजी मिना से अराफ़ात की तरफ़ रवाना होते हैं, उसी रोज़ सुबह से वह हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद बुलन्द आवाज़ से

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, लाइलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर व लिल्हाहिलहम्द पढ़ना शुरू कर दें। इन तकबीरों का सिलसिला मज़ीद चार रोज़ तक जारी रखें ताकि मिना में हाजियों के क़ियाम का पूरा ज़माना दुनिया में इन तकबीरों को बुलन्द करते हुये गुज़र जाये। ईदुल अज़हा की नमाज़ के लिये वही दस ज़िलहिज्जा की तारीख रखी गयी है जो हाजियों के लिये यौमुल नहर (क़ुर्बानी का दिन) है। हुक्म है कि इस नमाज़ के लिये जाते वक्त भी और वापस होते वक्त भी यह तकबीरें बुलन्द की जायें। इसी दिन सारी दुनिया में नमाज़ ईद के बाद वहीं क़ुर्बानियां शुरू हो जाती हैं जो हाजी मिना में करते हैं। इसी तरह दुनिया का हर मुसलमान यह महसूस करता है कि मैं उसी उम्मत का एक फ़र्द हूँ जिस उम्मत के लाखों आदमी इस वक्त हज कर रहे हैं और हज के ज़माने में वह तकबीरें कहते हुये नमाज़ पढ़ते हुये और क़ुर्बानी करते हुये गोया हाजियों के साथ होता है। ईदुल अज़हा में अगर्चे हज जैसे महान और विश्वव्यापी सम्मेलन नहीं होता मगर अपने-अपने स्थान पर मुसलमान हर जगह बड़ी से बड़ी कानफ्रेन्स करके नमाज़ अदा करते हैं, और कुल मिलाकर पूरी रूये ज़मीन पर एक ही ज़माने में ईद का मनाया जाना एक दूसरे अन्दाज़ में उम्मत की विश्वव्यापी एकत्व का प्रदर्शन हो जाता है।

तौहीद, एक सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का आधार :

संक्षेप में जो कुछ मैंने बयान किया है उससे यह

हक़ीक़त स्पष्ट हो जाती है कि अल्लाह तआला ने तौहीद, रिसालत, किताब और आख़िरत के अक़ीदे से वह बुनियाद प्रदान कर दी जिस पर क़ौम, वतन, रंग, भाषा और नस्ल के फ़र्क़ को खत्म करके दुनिया के सारे इन्सान एक विश्वव्यापी समुदाय बन सकते हैं। फिर इबादत के ऐसे तरीक़े निर्धारित कर दिये जो इस उम्मत में केवल एकत्व ही नहीं बल्कि बहुत ही मज़बूत अमली और व्यवहारिक एकता पैदा करते हैं और उस पर मजीद यह कि अपने आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० और अपनी आख़िरी किताब के ज़रिये से उसने वह सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था प्रदान कर दी जो पूरी इन्सानीयत के लिये हर जगह और हर ज़माने के लिये ऐसा मुकम्मल क़ानून है कि अपनी किसी ज़रूरत के लिये भी किसी जगह किसी दौर के इन्सानों को हिदायत की तलब में मार्गदर्शन हेतु किसी दूसरे साधन की और लपकने की ज़रूरत बाकी नहीं रहती ।

फिर इस नेमत की नाशुक्री क्यों ?

अब इसके बाद, इससे बड़ी बदक़िस्मती और शर्मनाक बदकिस्मती क्या होगी कि जिस उम्मत को अल्लाह तआला ने ऐसा व्यापक और सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था दिया, जिस उम्मत की वहदत (एकत्व) को क़ायम रखने के लिए उसने इतना बड़ा प्रबन्ध किया, और जिस उम्मत के हवाले उसने यह काम किया कि वह दुनिया में उस दीने तौहीद (एकेश्वरवादी धर्म) को फ़ैलाये ताकि पूरी इन्सानीयत उस पर जमा हो जाये वह अपने अस्ल काम को पीठ पीछे डाल कर अपनी वहदत ही के टुकड़े कर देने

पर तुल गयी है। वह तो इस ख़िदमत पर लगाई गयी थी कि दुनिया से उन कारकों को ख़त्म कर दे जिनकी वजह से इन्सान, इन्सान को मलेच्छ समझता है, अछूत समझता है। क़ाबिले नफ़रत समझता है, तुच्छ एवं कमतर समझता है और ख़ुदा की ज़मीन को ज़ुल्म व ज़्यादती और कत्ल व ग़ारत से नरक बना देता है। उसका मिशन तो यह था कि दुनिया को एक ख़ुदा की ग़ुलामी, एक क़ानून की पैरवी और एक विश्वव्यापी बिरादरी में जमा करके ज़ुल्म की जगह इन्साफ़, युद्ध की जगह शान्ति, नफ़रत व दुश्मनी की जगह भलाई व मुहब्बत क़ायम करे और सारी मानवजाति के लिये उसी तरह रहमत और दया बन जाये जिस तरह कि उसके रहनुमा और मार्गदर्शक हज़रत मुहम्मद सल्ल० रहमतुल्लिल आलेमीन (सारे जहानो के लिये दया) बना कर भेजे गये थे। लेकिन यह सब कुछ छोड़ छाड़कर वह अपनी कूव्वतें आपस के बिखराव पर लगा रही है। उसके लिये सबसे दिलचश्प काम यह बन गया है कि उसके समर्थक और गिरोह आपस में एक दूसरे का विरोध करें, और विरोध को बढ़ाकर नफ़रत व दुश्मनी की हद तक ले जायें, नेकनीयती के साथ राय और इल्म तहकीक और शोध का इख्तिलाफ तो रहमत बन सकता है और बुज़ुर्गों में वह रहमत साबित भी हुआ है। लेकिन अब इस उम्मत में इख्तिलाफ़ के मायने मुखालफ़त के हो गये है और किसी से किसी मसले में इख्तिलाफ़ हो जाने का मतलब यह हो गया है कि आदमी पन्जे झाड़कर उसके पीछे पड़ जाये, यहां तक कि उसकी बेइज़्ज़ती और अपमान

में कोई कसर न उठा रखे। और जो कहीं इख्तिलाफ़ मज़हबी नोइयत का हो जाये तो फिर उसे जहन्नम के दरवाज़े तक पहुंचाये बग़ैर दम लेना हराम है। इससे बड़ी बदनसीबी और क्या हो सकती है कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने जिनके लिये इत्तिहाद और एकता का इतना बड़ा प्रबन्ध किया था उनके लिये अब फ़िरक़ाबन्दी और बिखराव के सारे दरवाज़े खुल गये हैं और इत्तिहाद के दरवाज़े बन्द होते चले जाते हैं, यहां तक कि मिलकर नमाज़ पढ़ना भी मुश्किल हो गया है, मस्जिदें अलग हो गयी हैं, एक मस्जिद में दूसरे मसलक और समुदाय का आदमी नमाज़ पढ़ ले तो वह जगह नापाक हो जाती है जहां उसने नमाज़ पढ़ी हो, एक जमाअत का आदमी दूसरी जमाअत के आदमी से हाथ मिलाने तक से परहेज़ करता है कि कहीं हाथ गन्दा न हो जाये। ''इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन''।

''यह सब कुछ किस चीज़ का नतीजा है'' ?

यह सब कुछ इसी चीज़ का नतीजा है जिसकी तरफ मैं पहले इशारा कर चुका हूँ कि मुख़्तलिफ़ लोगों ने तौहीद और दीन व शरीअत में नई नई चीज़ों की मिलावट कर दी है, अस्ल दीन के अक़ीदे और आदेशों में कुछ बढ़ाया और कुछ घटाया जाता है, जो चीज़ें अहम न थी उन्हें अहम तरीन बनाया है, और जो अहम थीं उन्हें गैर अहम बना दिया है। और फिर उन्ही मिलावटों और कमी व ज़्यादती को ईमान की बुनियाद क़रार दे दिया है। यही वजह है कि उम्मत के मुख्तलिफ़ गिरोह आपस ही में लड़ने-मरने पर आमादा

हो गये हैं। इस स्थिति में हिदायत से बेफ़िक्र इन्सानों को हक़ की दावत देकर इस विश्वव्यापी बिरादरी में शामिल करना तो अलग रहा, जो इस बिरादरी में पहले से शामिल हैं खुद उन्हें भी इससे ख़ारिज करने का काम बड़ा सवाब समझ कर अन्जाम दिया जा रहा है। इस सूरते हाल ने हमें ग़ैर मुस्लिमों के लिये एक तमाशा बना कर रख दिया है, और मुश्तीश्अकीन (गैर एशियाई लोग) को यह कहने की हिम्मत हुई है कि यह उम्मत सिरे से कोई उम्मत ही नहीं है। इस वक्त इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार के मार्ग में अगर कोई सबसे बड़ी रूकावट है तो वह हमारी हालत है। खुदा हम पर रहम फ़रमाये और हमें सीधा रास्ते दिखाये। आमीन !

दुनिया के सारे धर्मो और सम्प्रदायों में बुनियादी ख़राबी यह है कि जो इन्सान उन पर ईमान लाते हैं वह अपने सम्पूर्ण जगत के सृष्टा के सम्बंध से न तो सही धारणा रखते हैं और न उसके बारे में सही तरीकेकार इख्तियार करते हैं। सिर्फ इस्लाम ऐसा धर्म है जो जगत के सृष्टा और इन्सान के सृष्टा के बारे में हमें सही धारणा प्रदान करता है जिसे तौहीद कहते हैं। वह इन्सान को सही तरीक़ेक़ार बताता है जो उसे इख़्तियार करना चाहिये। यह चीज़ दुनिया की सारी जातियों में मुसलमानों को अलग करता है। यह वह अस्ल गौरव है जिसकी वजेह से पता चलता है कि यह ख़ालिस तौहीद (विशुद्ध एकेश्वरवाद) के मानने वाले है। इसके अलावा कोई चीज़ ऐसी नहीं जो बुनियादी तौर पर मुसलमानों को दूसरी जातियों से अलग करे। मगर यह अजीब बात है और उस पर जितना

अफ़सोस किया जाये कम है कि मुसलमान अपनी इस अस्ल पहचान और हैसीयत को भुला दिया और इस तरह मुसलमानों ने एक बहुत बड़ी नेमत से अपने आपको खुद वंचित कर लिया है। इसलिये मेरे नज़दीक सबसे पहला काम जो निहायत ज़रूरी है यह है कि हम स्पष्ट रूप से और साफ-साफ तौहीद को न सिर्फ़ समझें बल्कि एक-एक बच्चे के दिल व दिमाग़ में तौहीद की सही धारणा उतारने की कोशिश करें। जब तक यह बुनियादी ख़राबी दूर नहीं होती उस वक्त तक इस सिलसिले में कोई दूसरा सुधार कार्य सफल नहीं हो सकता ।

तौहीद क्या है ?

तौहीद क्या है? क्या सिर्फ़ यह कि आदमी माने कि खुदा मौजूद है। दुनिया में कोई क़ौम ऐसी नहीं गुज़री है और न आज है, जो पूर्ण रूप से खुदा के वजूद से इन्कार करे। कुछ न कुछ अधर्मी तो हर ज़माने में मौजूद रहे हैं। रूस की नास्तिकता की भी बहुत चर्चा रही है लेकिन रूसी शासकों ने अपनी पांच प्रतिशत जनसंख्या को भी खुदा का इन्कारी नहीं बना सके। जबकि खुदा के इन्कार के लिये प्रोपेगन्डा करते हुये उन्हें चालीस वर्ष से अधिक हो गये हैं। इस प्रोपेगन्डे पर दौलत और ताक़त खर्च की जा रही है लेकिन स्थिति यह कि पिछले विश्व युद्ध में जब जर्मन सेनायें लगातार सफलता प्राप्त करती हुई रूस में घुसती चली गयीं तो स्टालिन ने जनता से कहा कि मस्जिदों और गिर्जाओं में जाकर खुदा से दुआयें करो कि वह हमें इस मुसीबत से में ज्ञात दिलाये।

मानो वह लोग जो खुदा से दुआ करते हैं और उसके ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डे का अभियान चलाते रहते हैं वह भी खुदा के अस्तित्व को मानने पर मजबूर हो जाते हैं। खुदा के अस्तित्व से सामूहिक रूप से इन्कार इन्सान के लिए कभी सम्भव नहीं हो सका।

फिर तौहीद के मायने यह नहीं कि आदमी यह माने कि खुदा एक है। दुनिया की कोई क़ौम ऐसी नहीं जो बहुत सारी हस्तियों को खुदा मानती हो, भारतीय बहुदेव वादियों के निकट परमात्मा एक ही है- प्राचीनकाल के ज़रतुश्ती खुदा को एक ही मानते थे। क़ुरआन पाक मक्का के काफ़िरों से सवाल करता है कि तुम्हें किसने पैदा किया ? तो वह कहते हैं कि अल्लाह ने । .क़ुरआन पाक सवाल करता है कि ज़मीन व आसमान को किसने पैदा किया ? वह कहते हैं अल्लाह ने- वास्तव में अस्ल गुमराही जिसमें इन्सान पुराने ज़माने में भी मुब्तेला था और आज भी है, यह है कि आदमी, अल्लाह एक ही मानता है लेकिन इलाह (Authority) बहुत से मानता है।

शिर्क की नोइयत :-

क़ुरआन पाक ने सारा ज़ोर इस पर दिया है कि आदमी बहुत सारी हस्तियों के बजाये सिर्फ एक अल्लाह ही की हस्ती को रब और इलाह माने। अल्लाह की किताब ने इस्लाह और सुधार के लिये सारा ज़ोरे बयान इसी पर सर्फ़ किया है। क़ुरआन में अल्लाह के मौजूद होने के दलीलों पर इतना ज़ोर नहीं जितना उसके इलाह और रब

होने के दलील पर है नास्तिकता के खन्डन पर मुश्किल से दो तीन आयतें आयी हैं और शिर्क के खण्डन में अनगिनत आयतें मौजूद हैं- अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने के मामले में लोग बुनियादी तौर पर चार गलतियों में मुब्तेला होते हैं-

1- अल्लाह की ज़ात में शिर्क

2- अल्लाह की सिफ़ात में शिर्क

3- अल्लाह के इख्तियारात में शिर्क

4- अल्लाह के हुकूक में शिर्क

1- अल्लाह तआला की ज़ात में शिर्क की खुली हुयी मिसाल ईसाई पेश करते हैं, वह हज़रत ईसा अलैह० को अल्लाह का बेटा बताते हैं। यह बात कि अल्लाह की ज़ात किसी इन्सान या किसी प्राणी के अस्तित्व में अपना रूप ज़ाहिर करे एक बेकार बात है। इन्सान कभी ज़ेह्न में नहीं ला सकता कि वह जो सम्पूर्ण जगत का सृष्टा है, एक इन्सान के अस्तित्व में प्रवेश कर जाये। अल्लाह का बेटा होने का अक़ीदा, ज़ात में शिर्क का अक़ीदा है, इसी तरह मुश्रिक यानी बहुदेववादी फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां मानते थे। यह भी अल्लाह की ज़ात में शिर्क है, इसी तरह भारत के मुश्रिकों का अक़ीदा भी कि भगवान ने राम के अस्तित्व में प्रवेश किया, अल्लाह की ज़ात में शिर्क पर आधारित है।

2- दूसरी बड़े पैमाने पर ग़लती सिफ़ात (गुणों) में शिर्क की है। यह अल्लाह की सिफ़त है कि वह ''माकाना मायकून'' को जानता है। यह उसकी सिफ़त है कि वह

कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे को जानता है। यह उसकी सिफ़त है कि वह एक ही वक्त में कायनात के हर व्यक्ति की बात सुनता है। कोई शख्स ज़मीन के एक कोने से पुकारता है तब भी सुनता है और कोई दूसरा व्यक्ति उसी समय ज़मीन के दूसरे कोने से पुकारता तब भी वह सुनता है। फिर उसके बसीर (दृष्टिवान) होने की सिफ़त है यानी वह हर चीज़ को एक ही समय में देख रहा है। अगर दूसरी हस्तियों के बारे में भी इन्सान यह समझे कि जैसे अल्लाह अलीम (सर्वज्ञ) है वह भी इसी तरह अलीम है, और जिस तरह अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है उसी तरह वह भी सुनने वाले और देखने वाले हैं तो स्पष्ट है कि तौहीद की सही धारणा उसके दिमाग़ में उतर ही नहीं सकती। अगर कोई आदमी अपने बिस्तर पर लेटे लेटे किसी बुज़ुर्ग को पुकार रहा है कि मेरी मदद करो तो ज़ाहिर है कि वह अल्लाह की सिफ़ात को बन्दे की ओर परिवर्तित कर रहा है।

3- इसी तरह खुदा के इख्तियारों (अधिकारों) को बन्दो की ओर परिवर्तित करना अल्लाह के इख्तियारात में शिर्क है, सम्पूर्ण सृष्टि की किस्मत बनाना या बिगाड़ना अल्लाह के अधिकार में है। उसने आदमी के लिए जितना कुछ निर्धारित किया है, कोई उससे कम या ज़्यादा नहीं कर सकता। अगर दुनिया की सारी शक्तियां किसी को नष्ट करना चाहें मगर अल्लाह को यह मन्जूर न हो तो उसे नष्ट नहीं कर सकता और अगर अल्लाह किसी को नष्ट करने का इरादा कर ले तो दुनिया की सारी शक्तियां

मिलकर भी उसे नहीं बचा सकतीं। इन्सान ने जो बुनियादी ग़लतियां की हैं उनमें से एक यह है कि उसने अल्लाह के अधिकारों में बहुत से हस्तियों को सम्मिलित कर लिया है। अगर इन्सान अल्लाह की ज़ात व गुणो और अधिकारों में शिर्क की गलतियां न करें तो फिर दूसरों की पूजा और उपासना की भी आवश्यकता न पड़े। वह उपासना और पूजा उसी की करता है जिसके बारे में यह ख्याल हो कि वह उसकी क़िस्मत बनाने या बिगाड़ने की शक्ति रखता है। अगर वह समझ ले कि किसी दूसरे के पास कोई हुकूमत और अधिकार नहीं तो वह अल्लाह के अधिकारों में शिर्क करने से रुका रहेगा।

4– इन्हीं तीन ग़लतियों का परिणाम यह है कि आदमी अल्लाह के हक़ों में शिर्क करने लगता है। उसे इबादत अल्लाह की करनी चाहिये, झुकना अल्लाह के आगे चाहिये मगर वह यह मान लेता है कि किसी और में ख़ुदाई सिफ़ात (ईश्वरीय गुण) और अधिकार हैं तो फिर इसके आगे झुकना शुरू कर देता है। क़ुरआन जो बात इन्सान के दिमाग़ में बिठाना चाहता है वह यह है कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, सुनने वाला, इल्म वाला, खबर रखने वाला और समर्थ रखने वाला वह है, दुआयें सुनने और क़ुबूल करने के इख्तियारात सिर्फ़ अल्लाह के हैं और पूजा और उपासना उसी की होनी चाहिये। क़ुरआन में जगह–जगह मज़बूत दलीलों के साथ बार–बार इन बातों को दुहराया गया है ताकि इन्सान अल्लाह के सिवा दूसरों को माबूद और उपास्य बनाने से बच जाये। उलूहीयत (ईश्वरत्व) में शिर्क की उस

ग़लती की तरह, जिस ग़लती में इन्सान सदैव मुब्तेला होता है वह रबूबीयत (पालनकारिता) में शिर्क की ग़लती है। रब के मायने है पालनकर्ता, सरदार और मालिक- इन दोनों अर्थों में इन्सानों ने अल्लाह के साथ बन्दे को सम्मिलित किया है।

रुबूबीयत (पालनहारी) में शिर्क :-

लोगों ने समझा कि हमें रिज़्क (जीवन सामग्री) देने में अल्लाह के साथ दूसरे भी सम्मिलित हैं। हमें पालने, रोजगार दिलवाने और सेहत और स्वास्थ प्रदान करने में दूसरे भी शामिल हैं, चुनांचे जब दूसरों को रब यानी पालनहार ठहराया तो उसके आगे झुकने लगे। इन्सान जब तक किसी को अपना रब (पालनकर्ता) न समझेगा उसके आगे नहीं झुकेगा, परवरदिगारी (पालनकारिता) की सिफ़त इन्सान उन हस्तियों की ओर परिवर्तित करते रहे हैं जो उनकी धारणा के अनुसार दैवीय शक्तियों के मालिक हैं, कुछ लोगों ने फ़रिश्तों के बारे में, कुछ ने इन्सानों के बारे में, कुछ ने चांद-तारों, जानवरों और वृक्षों तक के बारे में पालनहारी का तसव्वुर क़ायम किया। रुबूबीयत (पालनहारी) की एक धारणा यह भी है कि इन्सान, इन्सान का रब है। नमरूद का दावा था कि चूंकि ईराक की धरती में ताक़त व हुकूमत मेरे हाथ में है इसलिए रब मैं हूँ। जब हज़रत इब्राहीम अलैह० ने फ़रमाया ''रब्बिल्लज़ी युहयी व यूमीतो'' (मेरा रब वह है जिसे चाहता है जिलाता है जिसे चाहता है मारता है) तो उस पर नमरूद कहने लगा कि मैं भी जिसे चाहता हूँ जिलाता हूँ ओर जिसे चाहता हूँ मारता

हूँ। तब हज़रत इब्राहीम अलै० ने फ़रमाया.....
मेरा पालनहार तो सूरज पूरब से निकालता है तू ज़रा सूरज को पश्चिम से निकाल कर दिखा तो ''फबुहितल्लज़ी कफरा'' काफ़िर हैरान रह गया। वह हैरान इसलिए रह गया कि अपने दिल में वह भी इस बात से आगाह था कि इस जगत का पालनहार मैं नहीं हूँ मगर वह अपनी धरती पर अपनी पालनहारी चलाना चाहता था। इसी तरह फ़िरऔन का वाक़िया है। फ़िरऔन ने एलान किया कि ''अना रब्बुकुमुल आला'' (मैं सबसे बड़ा पालनहार हूँ) उसकी बुनियाद यह थी कि वह समझता था पूरे मिस्र पर मेरी हुकूमत है और उसका ख्याल था कि चूंकि मिस्र की सारी व्यवस्था मेरे नियन्त्रण में चल रही इसलिए सबसे बड़ा रब मैं हूँ लेकिन तौहीद- रूबूबीयत में किसी बटवारे के समर्थक नहीं । इसलिए क़ुरआन में अनेक स्थानों पर अल्लाह तआला की शाने रूबूबीयत का ज़िक्र आया है। इसका मक़सद यही है कि यह बात इन्सान के ज़ेहन में बिठा दी जाये कि अल्लाह के सिवा कोई रब और इलाह नहीं है। यह मूल उद्देश्य है क़ुरआन पाक का।

लोगों को ज़िन्दगियों में जो खराबियां पायी जाती हैं, वह उसी वक़्त खत्म हो सकती हैं जब उनके दिमाग़ में से उलूहीयत (ईश्वरत्व) और रूबूबीयत (पालनकारिता) की ग़लत धारणा निकल जाये। अगर रूबूबीयत और उलूहीयत के बारे में गुमराही दूर न हो तो कोई चीज़ नहीं जिससे लोगों का सुधार हो सके।